नगपति की गोद में पली भारत की आत्मा के साथ, उल्लास, उमंग और आनन्द की सरिता में निमग्न
स्वराष्ट्र मंत्री—२७–१–७८

गृहमंत्री—सांस्कृतिक दलों के डेरे में ।

गणतंत्र दिवस के उपलक्ष में आयोजित सांस्कृतिक समारोह में नृत्य मुद्रा में गृहमंत्री चौधरी चरणसिंह

# देशभक्त-मोर्चा एक परिचय

जब देश की स्वाधीनता खतरे में पड़ी हो और सीमाओं पर संकट के बादल उमड़–घुमड़ कर मँडरा रहे हों, उस समय देश के नागरिकों का एक ही कर्तव्य शेष रह जाता है—अपनी सम्पूर्ण शक्ति, साधन और क्षमता के साथ उस चुनौती को हँसते–हँसते अंगीकार करना ताकि सम्पूर्ण राष्ट्र किसी वज्र–पुरुष की भाँति एकजुट होकर दुश्मनों के दाँत खट्टे कर सके। सीमाओं पर मोर्चे तो बाद में जीते जाते हैं, किन्तु हार–जीत का निर्णय तो पहले ही से देश के भीतर हो चुका होता है कि उस संकट-ग्रस्त राष्ट्र के नागरिकों का मनोबल कितना ऊँचा है? वे किसी चट्टान सदृश, दृढ़-निश्चय, आत्म–विश्वास, साहस, सूझ–बूझ और अटूट एकता के साथ युद्ध की द्वितीय रक्षा–पक्ति पर कितने सफल सिद्ध होते हैं।

संसार का इतिहास गवाह है कि नागरिकों का यही मनोबल बड़े से बड़े युद्ध में हार–जीत का निर्णायक होता है, किन्तु यह मनोबल सहज ही में उपलब्ध नहीं होता। सुप्तावस्था से विराट् जन–शक्ति को जाग्रत करने के लिए किसी न किसी माध्यम की आवश्यकता होती है और वह माध्यम किसी जन–अभियान अथवा जन–आन्दोलन के रूप में उभरता है, तो जन–मानस में अपराजेय आत्म–शक्ति का साकार स्वरूप ग्रहण कर हर स्थान, हर काल, हर अवसर पर जन-जन को निरन्तर प्रेरित करता है।

भारत के प्रथम स्वाधीनता संग्राम के ऐतिहासिक समराङ्गण कानपुर की पवित्र और जुझारू माटी में जन्मे, पले और पनपे देशभक्त मोर्चा की प्रेरक कहानी सन् १९६२ के अप्रत्याशित चीनी आक्रमण की अग्नि–परीक्षा से उद्भूत उस जागरूक और सक्रिय आन्दोलन की जयगाथा है, जिसके रचनात्मक उद्बोधन ने कभी कानपुर के लक्ष–लक्ष नागरिकों को अनुप्राणित कर दिया था।

'देशभक्त मोर्चा' दलगत राजनीति या गुटगत स्वार्थों में परिलिप्त कोई ऐसी संस्था नहीं है, जहाँ पद और प्रभुता की आकाँक्षा की जाये। यह किसी भी प्रकार थोथी-प्रशस्ति या यश–प्राप्ति या सार्वजनिक प्रतिष्ठा हासिल करने का कोई मंच नहीं, बल्कि यह राष्ट्रीयता और देशभक्ति से ओत–प्रोत विशुद्ध रचनात्मक संगठन है, जो देश की स्वाधीनता और अखण्ड प्रभुसत्ता की सदा–सर्वदा सुरक्षा के लिए हर सत्ता को अपना समर्थन प्रदान करता आया है। निश्चय ही जागरूक लोकतन्त्र में हर दल की सरकारें बनती हैं, बिगड़ती हैं, किन्तु कोई भी सत्ता देश की आजादी पर तनिक भी खतरा, तनिक भी आँच सहन नहीं कर सकती है। देशभक्त मोर्चे के मूल में देश के प्रति सर्वस्व उत्सर्ग की भावना व्याप्त है और यही कारण है–जाति-पाँति, धर्म–सम्प्रदाय और वर्गभेद से परे अब तक लाखों लोगों ने इस मोर्चे के प्रत्येक आयोजन में भाग लेकर मोर्चे के प्रति विश्वास व्यक्त कर आगे बढ़कर इस संगठन को गले लगाया है। मोर्चा प्रारम्भ ही से दलों को नहीं बल्कि देश को प्रधानता देता आया है, इसलिए यह मोर्चा पूरब–पश्चिम, उत्तर–दक्षिण का न होकर हर देशभक्त नागरिक का अपना मोर्चा बन गया है। मोर्चे का यह सौभाग्य है कि उसने देश के युवा–वर्ग के हाथों जन्म पाया

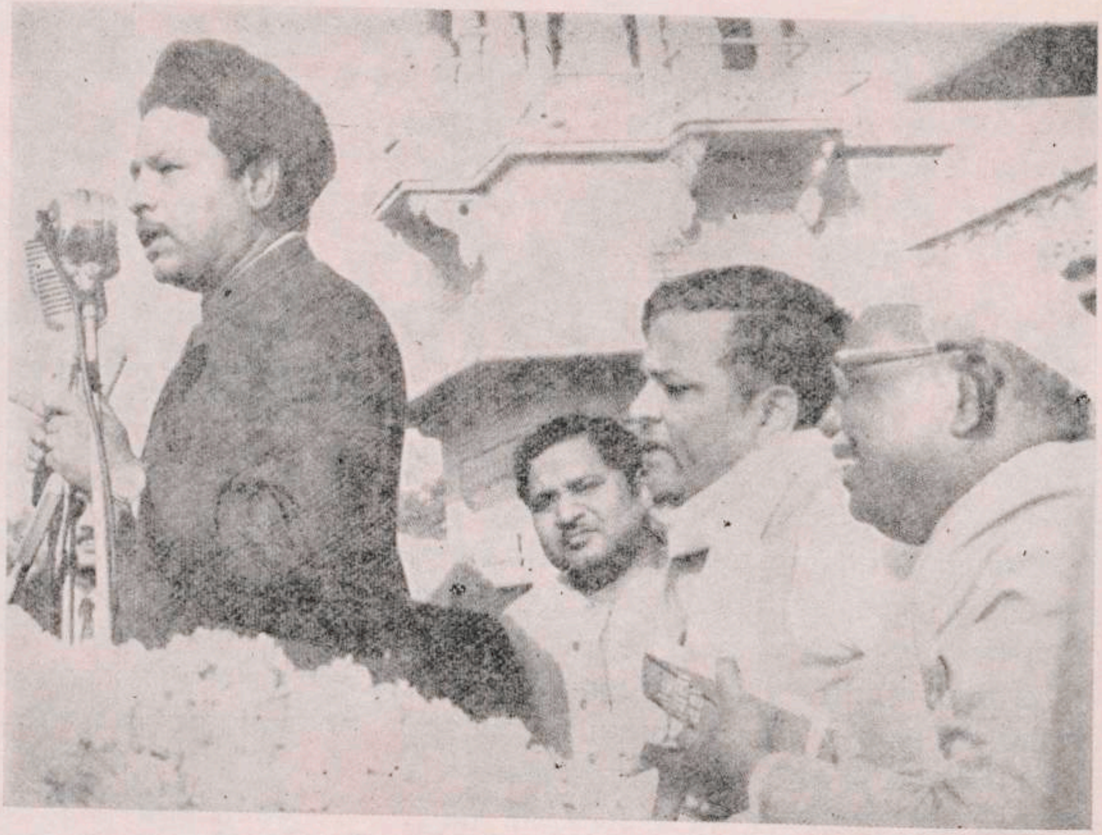

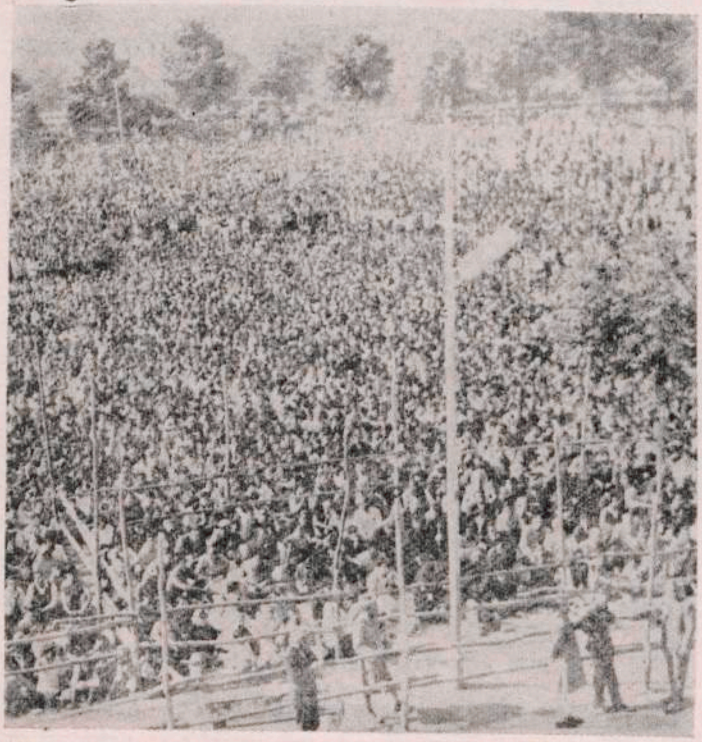

बाँगला देश के जन्म पर देश-भक्त मोर्चा द्वारा फूलबाग के मैदान में आयोजित विशाल - रैली को सम्बोधित करते हुए संयोजक श्री रमारत्न शुक्ल। मंच पर बैठे हैं तत्कालीन रक्षामन्त्री श्री जगजीवन राम और नगर प्रमुख श्री रतन लाल शर्मा।

रैली में आया हुआ एक अपार जन-समुद्र।

है, जो किसी भी राष्ट्र के उन्नयन की आधार शिला होते हैं।

देशभक्त मोर्चे के श्रीगणेश के सम्बन्ध में कुछ सच्चाइयों का उल्लेख समीचीन होगा। स्वाधीन भारत में आज भी अनेक ऐसे राष्ट्र-प्रेमी परिवार हैं, जिन्होंने राष्ट्र के प्रति अपनी सेवाओं को भुनाना स्वीकार नहीं किया है। कानपुर के राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्र की विभूति और कर्मठ काँग्रेसी स्वर्गीय पंडित श्रीरत्न शुक्ल ऐसे ही देश सेवकों में से थे। कानपुर के तिलकहाल में उनकी पुण्य-तिथि पर स्वर्गीय शुक्ल जी के चित्र का अनावरण करते हुए तत्कालीन प्रधानमन्त्री स्वर्गीय श्री लालबहादुर शास्त्री ने बड़े भावपूर्ण शब्दों में उनकी सेवाओं का स्मरण कर उन्हें अपनी श्रद्धाँजलि अर्पित की थी। जीवन भर घोर अभावों की आग में निरन्तर तपते रहकर भी उन्होंने अपनी राष्ट्र-निष्ठा पर आँच नहीं आने दी। संघर्षों से निरन्तर जूझते रहने की यही आग विरासत में मिली उनके एकमात्र पुत्र श्री रमारत्न शुक्ल को, जो सोलह वर्ष की अपरिपक्व आयु में ही कानपुर के सार्वजनिक-जीवन में सक्रिय होकर छात्र-नेता के रूप में उतर आये। ९ अगस्त, सन् १९४२ को जब भारत-छोड़ो-आन्दोलन, के अन्तर्गत महात्मागाँधी गिरफ्तार हुए तो ब्रिटिश सरकार ने अपना सारा आक्रोश छात्रों पर ही उतारा। विद्यार्थी रमारत्न ने छात्र-नेता के रूप में 'कानपुर स्टूडेन्ट फ्रन्ट' के माध्यम से प्रतिष्ठित समाचारपत्रों में अपनी विज्ञप्तियों द्वारा ब्रिटिश नौकरशाही को चेतावनी दी कि स्कूल-कालेज से निलम्बित छात्रों के साथ ब्रिटिश सरकार का अपमानपूर्ण रवैया कतई बर्दाश्त नहीं किया जायेगा। उनके द्वारा गठित 'कानपुर स्टूडेन्ट फ्रन्ट' उस समय उत्तर प्रदेश के छात्रों की आवाज बन गया और सोलह वर्ष की आयु में पहलीबार उन्हें जेल जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। एक ओर घर में रोटियों के लाले और रोजमर्रा की पारिवारिक जिम्मेदारियाँ, दूसरी ओर देश के लिए कुछ कर गुजरने की उत्कट लगन, इन्हीं द्वन्द्वों ने श्री रमारत्न को प्रतिरोधों को झेलने की क्षमता प्रदान की। 'देशभक्त मोर्चा' उन्हीं के संकल्पों की देन है। वह आत्म-विश्वास के इतने धनी हैं कि जो संकल्प उठा लेंगे, उसकी सफलता में उन्हें संशय नहीं रहता चाहे कितना ही गुरुतर कार्य क्यों न हो। सन् १९६२ में जब दुर्दान्त चीनी आक्रमण के समय उन्होंने देशभक्त मोर्चे का गठन किया, तो कानपुर का युवा-वर्ग कन्धे से कन्धा मिलाकर मोर्चे की सफलता में जी-जान से जुट गया। देशभक्त मोर्चे ने कानपुर की जनता में जैसे नयी जान फूँक दी हो। देशभक्त मोर्चा धीरे-धीरे हर नागरिक का मोर्चा बन गया। इस मोर्चे के तत्वावधान में एक से एक उत्कृष्ट और विशाल राष्ट्रीय, सांस्कृतिक और सामाजिक आयोजनों की श्रृंखला तैयार होती चली गयी। कानपुर की जागरुक जनता देशभक्त मोर्चे के हर आयोजन, हर आवाज को अपना आयोजन मानती आयी है और यही कारण है कि 'मोर्चा' आज भी ऐरावत की भाँति देश-भक्ति, स्वाधीनता और लोकतन्त्र के कंकटाकीर्ण विशाल-पथ पर निर्भयतापूर्वक अनवरत गति से गतिमान है।

## हिमालय बचाओ दिवस

मोर्चे का सर्वप्रथम अभियान 'हिमालय बचाओ दिवस' के रूप में अवतरित हुआ। १५ दिसम्बर सन् १९६२ की वह महत्त्वपूर्ण सन्ध्या कानपुर के नागरिकों को भूली नहीं होगी, जब कानपुर नगर महापालिका के तत्कालीन नगर प्रमुख स्वर्गीय डा० धीरेन्द्र नाथ बनर्जी के नेतृत्व में ऐतिहासिक श्रद्धानन्द पार्क से एक विशाल जुलूस नगर के मुख्य मार्गों से घूमता हुआ फूलबाग पहुँचा था। मोर्चे ने उस समय अपने उद्देश्य और लक्ष्य के रूप में कानपुर की जनता को तीन नारे दिये—'जय-किसान', 'जयहिन्द' और 'जय-जवान'। 'हिमालय बचाओ दिवस' पर लगभग पचास हजार नागरिकों ने चीनी-आक्रमण के विरोध में विशाल प्रदर्शन करके हिमालय की रक्षा करने का दृढ़-संकल्प लिया था। सायंकाल फूलबाग की महती सभा में भाषण देते हुए उत्तर प्रदेश के तत्कालीन पुनर्वास एवं जेलमन्त्री स्वर्गीय गोविन्द सहाय जी ने बड़े ओजस्वी शब्दों में कहा था कि चीन ने हमारे देश पर बर्बर और कायरतापूर्ण आक्रमण कर सारे देश की आँखें खोल दीं और समूचे देश को एकता के सूत्र में बाँध दिया है।

## शहीदों को सलामी दो

मातृभूमि की बलिबेदी पर प्राणोत्सर्ग कर नेफा और लद्दाख की सीमाओं को अपने पवित्र लहू से तर करने वाले

# किसान - दिवस - रैली

स्वायत्त–शासन मन्त्री श्री सत्य प्रकाश मालवीय, नगर की शिक्षण संस्थाओं के छात्र-छात्राओं की विशाल रैली में सलामी लेते हुए। पार्श्व में हैं नगर–प्रशासक श्री एस० एम० सिद्धू, आई० ए० एस०।

रैली में प्रस्तुत साँस्कृतिक कार्यक्रम का एक सुन्दर दृश्य

श्री सत्य प्रकाश मालवीय, स्वायत्त शासन मन्त्री, उत्तर प्रदेश, रैली को सम्बोधित करते हुए। श्री एस० एस० सिद्धू, प्रशासक एवं श्री रमारत्न शुक्ल, मंच पर आसीन हैं।

शहीदों के प्रति नागरिकों की ओर से भावभीनी श्रद्धाँजलि अर्पित करने हेतु देशभक्त मोर्चा का दूसरा आयोजन 'शहीदों को सलामी दो' दिवस था, जो ३० दिसम्बर सन् १९६२ को आयोजित किया गया था। आयोजन की भव्यता का उल्लेख करते हुए इस नगर के प्रमुख दैनिक विश्वमित्र ने लिखा था- "यह अतिशयोक्ति नहीं है कि इस प्रकार का प्रभावोत्पादक जुलूस कानपुर नगर में अपने आप में अभूतपूर्व था और सम्भवतः इस विशालता से अन्यत्र किसी नगर में नहीं निकला। इस जुलूस का मार्ग कानपुर नगर में अब तक के निकले जुलूसों में सबसे लम्बा था, जिसने घूम-घूमकर नगर की सरहदों को भी चूमा और नगर के मध्य-स्थलों को भी अपनी अनोखी छटा से प्रभावित किया।"

कानपुर नगर के लाखों नर-नारियों ने स्थान-स्थान पर नगर द्वारों को तोरणों, बन्दनवारों और पुष्पहारों से सुसज्जित कर अपने आह्लादित हृदयों का दिग्दर्शन कराया और अपनी रक्षा में शहीद हुए बाँकुरे सेनानियों के सम्मान में एकटक खड़े होकर जय-जयकार करते हुए सजल नेत्रों से श्रद्धाँजलियाँ समर्पित कीं। नगर के नवाबगज क्षेत्र में तोपों की सलामियों के बीच उस अंचल की कुल-ललनायें जब अपने देश के शहीदों के चित्रों की आरती उतार रही थीं, तो भावावेश में लोग फफक-फफक कर रो पड़े। लगभग सौ ट्रकों पर इन शहीदों में मेजर योगेन्द्र टण्डन, मेजर ध्यानसिंह थापा, ब्रिगेडियर होशियारसिंह, मेजर शैतानसिंह के हृदयग्राही चित्रों के साथ एक कीर्ति-स्तम्भ शहीदों की पवित्र स्मृति को ताजा कर रहा था।

## बख्शी गुलाम मोहम्मद का ऐतिहासिक स्वागत

'देशभक्त मोर्चा' व्यक्ति पूजा का विश्वासी नहीं है, किन्तु वह मातृभूमि के उन महान् सपूतों की सेवाओं को उपेक्षित भी नहीं कर सकता, जिन्होंने इस देश के गौरव और सम्मान में चार-चाँद लगाये हैं। कश्मीर भारत का सदा से अविभाज्य अंग रहा है और रहेगा। भारत की जनता पाकिस्तान से लड़ी गयी पिछली लड़ाइयों में इस सच्चाई पर किसी अविचल चट्टान की तरह अड़ी रही है। 'देशभक्त मोर्चा' के तत्वावधान में २२ जनवरी सन् १९७३ को कानपुर के नागरिकों द्वारा कश्मीर के तत्कालीन प्रधानमन्त्री शेरे कश्मीर बख्शी गुलाम मोहम्मद का भव्य स्वागत किया गया। कानपुर नगर महापालिका के मुख्यालय मोतीझील से फूलबाग तक के लगभग तीन मील लम्बे जन-मार्ग पर बख्शी साहब जब खुली मोटर में रवाना हुए, तो लाखों नर-नारियों ने मार्ग के दोनों ओर फुटपाथों इमारतों, छज्जों और छतों पर से फूल बरसाकर उनका अभूतपूर्व स्वागत किया। कानपुर के ही दैनिक विश्वमित्र के शब्दों में—'इस तरह का देवदुर्लभ स्वागत भारतीयों के प्राण पंडित जवाहरलाल नेहरू के अतिरिक्त कानपुर ने इससे पहले अन्य किसी नेता का तो किया ही नहीं।'

## पाकिस्तान का नग्न आक्रमण

सन् १९६५ में भारत पर पाकिस्तान के नग्न और बर्बर आक्रमण से देशभक्त मोर्चा पुनः सचेत हुआ। उसने सन् १९६२ में चीनी आक्रमण के प्रतिरोध में उठाये गये अभियान दोहराने शुरू कर दिये। पाकिस्तानी पैटनटैंकों और सेबरजेटों की धज्जियाँ उड़ाकर भारत ने अन्तर्राष्ट्रीय जगत में अपनी खोयी हुयी प्रतिष्ठा हासिल की। वीरोचित सम्मान के प्रतीक कीलर-बन्धुओं का कानपुर के महात्मा गाँधी मार्ग पर स्थित नवीन मार्केट में अभूतपूर्व स्वागत किया गया।

## भारतीय सुरक्षा गीतकार सम्मेलन

देशभक्त मोर्चे का विश्वास है कि अनादिकाल से इस प्रबुद्ध देश में सन्तों, महापुरुषों, कवियों, लेखकों और कलाकारों की संजीवनी वाणी जन मानस में नूतन प्राण घोलती आयी है। इसी उद्देश्य को सन्मुख रखकर सुप्रख्यात कवियित्री श्रीमती महादेवी वर्मा की अध्यक्षता में ११ फरवरी सन् १९६३ को गुरुनारायण खत्री इन्टर कालेज में देशभक्त मोर्चा द्वारा एक अखिल भारतीय सुरक्षा गीतकार सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस मंच पर देश के जाने-माने कवि सर्वश्री गोपालसिंह नेपाली, रामावतार त्यागी, रामानन्द दोषी, बालस्वरूप राही, गोपालदास नीरज, वीरेन्द्र मिश्र, बेकल उत्साही और फिल्मी गीतकार श्री प्रेमधवन उपस्थित थे। इन लोकप्रिय गीतकारों की ओजस्वी वाणी ने सहृदय श्रोताओं का हृदय मुग्ध कर दिया।

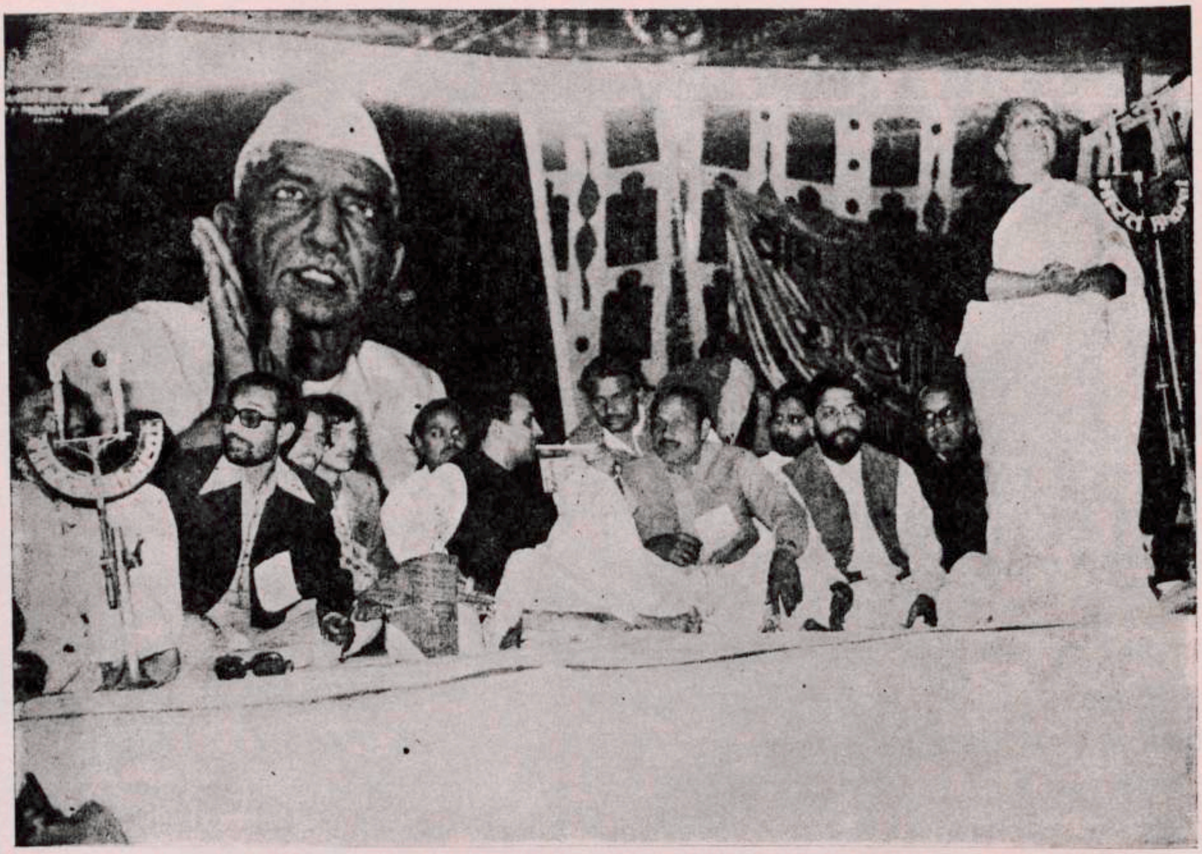

युवा सम्मेलन को सम्बोधित कर रही है डा० सुशीला नायर। बीच में बैठे हैं श्री सुब्रह्मण्यम् स्वामी संसद्-सदस्य, जिन्होने युवा-सम्मेलन का उद्घाटन किया।

किसान दिवस पर मुशायरा की अध्यक्षता करते हुये सर्वश्री फना निज़ामी जिनके निकट बैठे हैं श्री मन मोहन सिंह, संसद्-सदस्य श्री मनोहर लाल एवं श्री हरवस सिंह भल्ला।

## विजय-पर्व

स्वतन्त्र-भारत के शौर्य की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि बाँगला देश की मुक्ति है, जिसमें भारतीय सेना के तीनों अंगों के शौर्य, साहस और व्यूहन–कौशल पर सारा संसार आश्चर्यचकित रह गया था। 'देशभक्त मोर्चे' के लिए सचमुच यह एक महान् अवसर था और मोर्चे द्वारा 'विजय-पर्व' के रूप में एक विराट् आयोजन कानपुर के ऐतिहासिक स्थल फूलबाग में किया गया, जिसे सम्बोधित करने के लिए तत्कालीन रक्षामन्त्री श्री जगजीवन राम तथा बाँगला देश के श्री मलिक चौधरी पधारे थे। विजय पर्व का यह महोत्सव दर्शनीय था। चारों ओर लहराते हुए तिरंगे झण्डों की छटायें, राष्ट्रीय नेताओं और शेख मुजीब के चित्रों की कतारों के बीच लाखों नर–नारियों का वह अपार जन-समुद्र स्वयं में बड़ा भव्य और अनुपमेय था। केन्द्रीय रक्षा-मन्त्री का वह ओजस्वी भाषण अत्यन्त प्रेरक था। देशभक्त मोर्चे को अपनी उस सफलता पर विशेष गर्व है, क्योंकि युद्ध में प्रयुक्त अनेक आयुध कानपुर के ही सुरक्षा कारखानों में निर्मित हुए थे और इस अवसर पर निकाले गये विशाल जुलूस में उनके प्रदर्शन के साथ युद्ध–भूमि में इन आयुधों के शिकार पाकिस्तानी टैंक भी प्रदर्शित किये गये थे।

## किसान–दिवस

देशभक्त मोर्चा सदियों से उपेक्षित, पीड़ित और पद-दलित किसान को इस महान् देश की आत्मा मानता है। इसी उद्देश्य से देश के महान् किसान केन्द्रीय गृहमन्त्री चौधरी चरणसिंह के जन्मोत्सव पर गतवर्ष कानपुर में देश-भक्त मोर्चे के तत्वावधान में त्रिदिवसीय वृहत्तर कार्यक्रम की संरचना की गयी, जो मोर्चे की अब तक की उपलब्धियों में अपना एक विशिष्ट महत्व रखता है।

२३ दिसम्बर सन् १९७७ को इस त्रिदिवसीय वृहद् कार्यक्रम का शुभारम्भ कानपुर नगर महापालिका के समस्त विद्यालयों के छात्र–छात्राओं द्वारा प्रस्तुत मार्च-पास्ट से हुआ। नगर के मुख्य मार्गों से लगभग आठ हजार छात्र-छात्राओं की विशाल टोलियाँ निकलीं तथा फूलबाग में समवेत रूप से उनके द्वारा उत्तर प्रदेश के स्वायत शासन मन्त्री श्री सत्य प्रकाश मालवीय को सलामी दी गयी। फूलबाग में इन विद्यालयों के छात्र–छात्राओं द्वारा आकर्षक साँस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया, जिसमें राजस्थानी, पंजाबी, विशेषकर ग्राम्य–जीवन पर आधारित रंगारग नृत्य एवं मनोहारी झाँकियाँ प्रस्तुत की गयीं। कानपुर नगर महापालिका के प्रशासक श्री शिवेन्द्र सिंह सिद्धू ने इस अवसर पर चौधरी चरणसिंह के दीर्घायु होने की कामना की और दिवस के महत्व पर प्रकाश डाला। श्री मालवीयजी ने चौधरी साहब के आदर्श जीवन से प्रेरणा लेने के लिए जन-जन को अनुप्राणित किया।

## युवा–सम्मेलन

दूसरे दिन २४ दिसम्बर को फूलबाग में युवा-सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसका उद्‌घाटन प्रख्यात संसद्–सदस्य श्री सुब्रह्मण्यम स्वामी ने किया। सम्मेलन का सभापतित्व कानपुर के संसद सदस्य श्री मनोहर लाल ने किया और संयोजन युवा–जनता कानपुर के अध्यक्ष श्री लक्ष्मीशंकर गुप्त ने किया।

## महिला–सम्मेलन

अपराह्न २ बजे से प्रख्यात विदुषी श्रीमती कंचनलता सबरवाल की अध्यक्षता में महिला–सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसका उद्‌घाटन संसद–सदस्या डा० सुशीला नायर द्वारा सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन को उत्तर प्रदेश की शिक्षा उप–मन्त्री श्रीमती मालती शर्मा एवं शिक्षाविद् श्रीमती हेमलता स्वरूप ने सम्बोधित किया। सम्मेलन की प्रमुख विशेषता यह थी कि कानपुर में प्रथमबार मुस्लिम-परिवारों की पर्दानशीन महिलाओं ने इस प्रकार के सार्वजनिक कार्यक्रम में हजारों की संख्या में उपस्थित होकर भाग लिया। सम्मेलन का संचालन श्रीमती माधवी लता शुक्ल ने किया।

## कवि–सम्मेलन

रात्रि में ८ बजे से हिन्दी के सुप्रसिद्ध हास्यकवि श्री काशीनाथ उपाध्याय 'भ्रमर', 'बेधड़क बनारसी' की अध्यक्षता

# किसान रैली

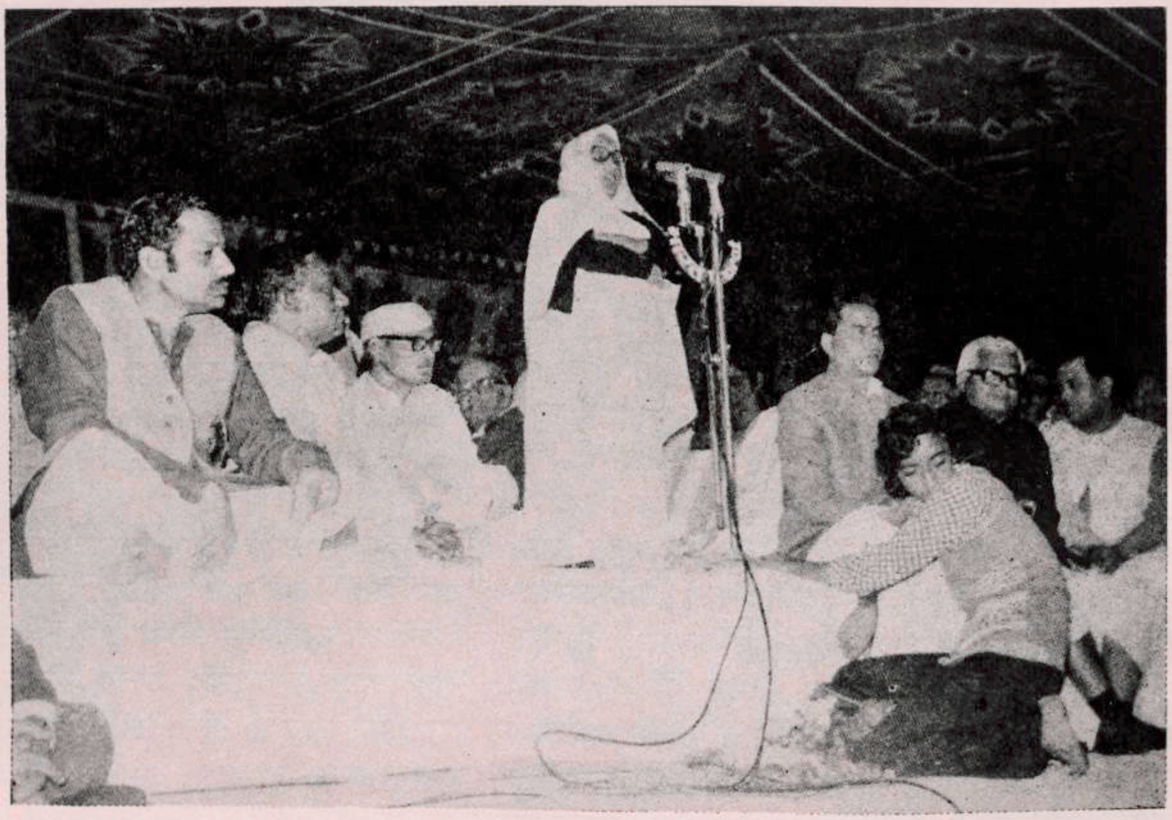

श्रीमती गायत्री देवी धर्मपत्नी श्री चरणसिंह रैली को सम्बोधित करते हुए । १५-१२-७७

किसान रैली के अवसर पर भारतसिंह चौहान, संसद-सदस्य श्री मनोहरलाल, मुख्यमन्त्री श्री रामनरेश यादव, श्रीमती माधवीलता शुक्ल एवं श्रीमती गायत्री देवी, धर्मपत्नी चौधरी चरणसिंह ।

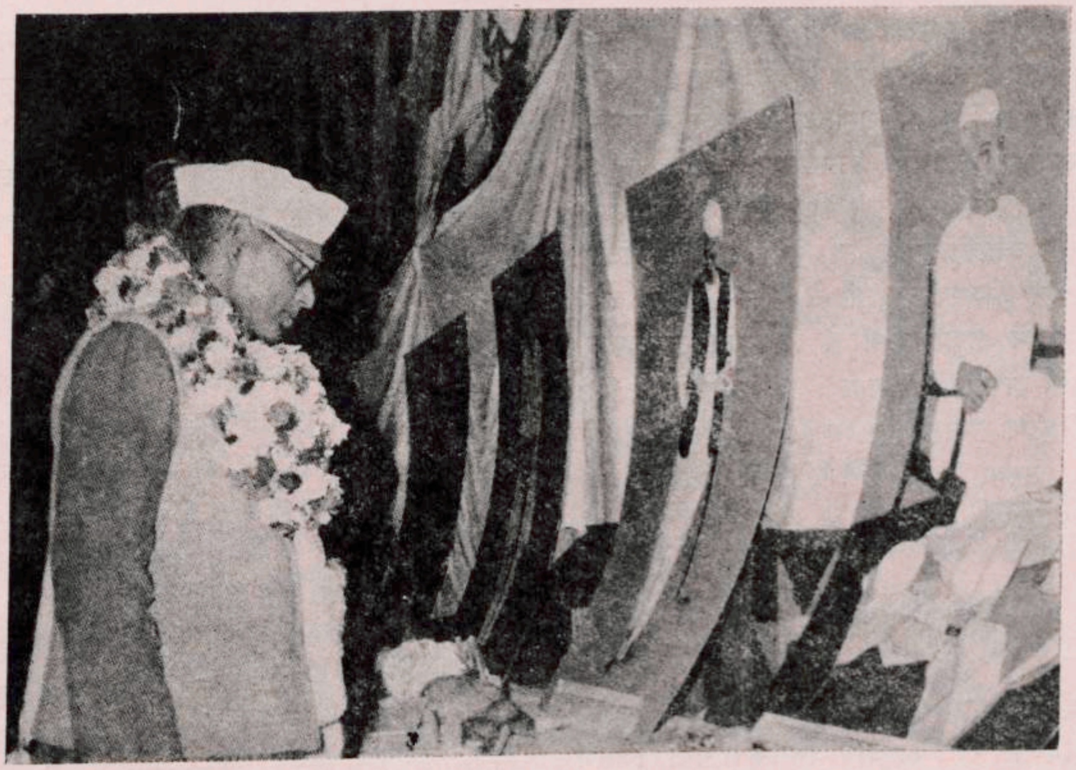

मेरठ किसान-प्रदर्शिनी का उद्घाटन करते हुये मुख्यमन्त्री श्री रामनरेश यादव ।

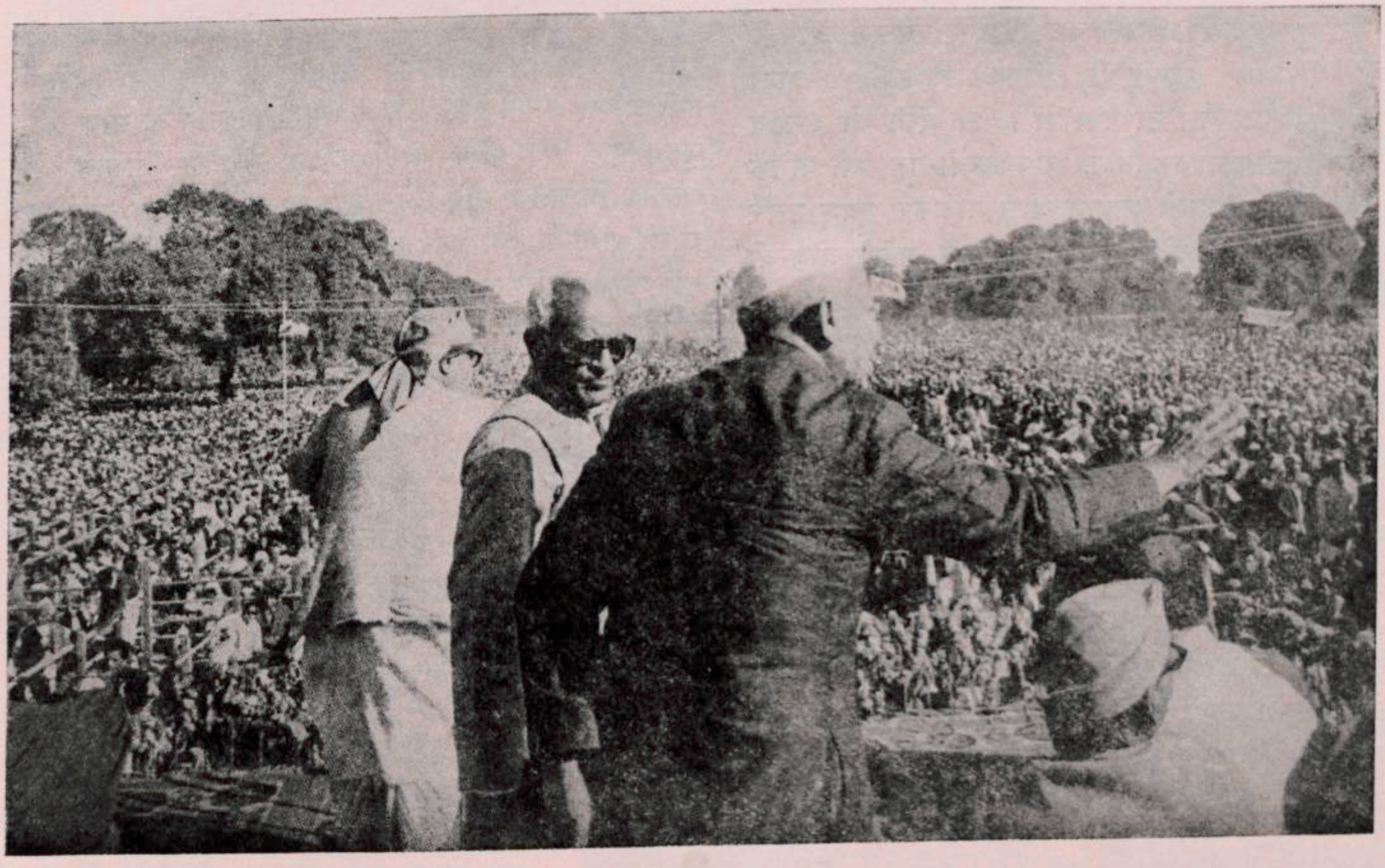

दिल्ली किसान–रैली को सम्बोधित करते हुये गृहमन्त्री श्री चरणसिंह
मंच पर साथ ही खड़े हैं स्वास्थ्य मन्त्री श्री राजनारायण
जनता पार्टी के प्रधानमन्त्री श्री नानाजी देशमुख ।

में अखिल भारतीय कवि–सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन केन्द्रीय राज्यमन्त्री, सूचना एवं प्रसारण श्री जगवीरसिंह ने किया। कवि–सम्मेलन में ख्याति प्राप्त कवि सर्वश्री रामावतार त्यागी, सोमठाकुर, शिवबहादुर सिंह भदौरिया, चातक, रामेन्द्र त्रिपाठी, उदयप्रताप, माणिक वर्मा जैसे लब्धप्रतिष्ठ कवियों ने हजारों श्रोताओं को अपनी सरस एवं ओजस्वी वाणी से रस–विभोर कर दिया। इसका संचालन आकाशवाणी के लोकप्रिय उद्घोषक श्री अशोक बाजपेयी द्वारा किया गया। कवि–सम्मेलन की व्यवस्था डा० श्रीकृष्ण कुमार राठौर और कृष्ण नारायण मिश्र ने 'पूर्णिमा' संस्था की ओर से की तथा स्वागताध्यक्ष थे श्री रमाकान्त पाण्डेय।

## विशाल रैली

समारोह के अन्तिम दिन २५ दिसम्बर को दोपहर ३ बजे से फूलबाग में एक विशाल रैली का आयोजन किया गया, जिसमें कानपुर के लाखों नर–नारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। रैली के महत्व और उसकी गरिमा को बढ़ाने के लिए केन्द्रीय गृहमन्त्री चौधरी चरणसिंह की धर्मपत्नी श्रीमती गायत्री देवी स्वयं पधारी थीं, जिनकी उपस्थिति से चारो ओर अभूतपूर्व उल्लास छा गया था। इस रैली को केन्द्रीय राज्यमन्त्री श्री जनेश्वर मिश्र, राज्यमन्त्री-गृह श्री धनिक लाल मण्डल, राज्यमन्त्री आवास श्री रामकिंकर एवम् उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री रामनरेश यादव ने अपनी ओजस्वी वाणी से सम्बोधित किया।

## मुशायरा

आयोजन का अन्तिम कार्यक्रम रात्रि में भारत के मशहूर शायर जनाबे फ़ना निजामी की सदारत में अखिल भारतीय मुशायरा था, जिसका उद्घाटन कानपुर के जिलाधीश श्री के० के० बख्शी ने किया। मुशायरे में मशहूर शायर खुमार बाराबंकवी, नूर लखनवी, कैफ भूपाली, सागर आजमी, शमीम झाँसवी, बरखा रानी, आदिल लखनवी, होश नूमानी, नुशूर वाहिदी के अतिरिक्त जाने–माने शायरों ने समा बाँध दिया और सम्पूर्ण आयोजन की, 'इति–श्री' को गरिमामय भव्यता प्रदान की। मुशायरा का प्रबन्ध श्री अहमद और श्री बकाई ने किया। इस प्रकार देशभक्त मोर्चा द्वारा आयोजित यह त्रिदिवसीय समारोह सानन्द, सोत्साह सम्पन्न हुआ।

## किसान - रैली

२३ दिसम्बर को दिल्ली में साथी राजनारायण द्वारा आयोजित किसान दिवस पर लाखों किसानों ने अपने नेता के जन्म-दिवस पर श्रद्धा–सुमन चढ़ाये और इस अवसर पर चौधरी चरणसिंह ने देश को नयी दिशा दी और देश की राजधानी के दरवाजे किसानों के लिए खोल दिये। देशभक्त मोर्चा की इस ऐतिहासिक रैली में हजारों की संख्या में संसद–सदस्य श्री मनोहर लाल के नेतृत्व में भाग लिया। लोगों का कहना है कि दिल्ली में इतनी विशाल–रैली इसके पहले कभी नहीं हुयी, जिसमें दूर–दराज से देश का किसान–वर्ग स्वेच्छा से अपना पैसा खर्च करके अपने नेता के प्रति भक्ति–प्रदर्शित करने के लिए एकत्र हुआ हो।

इस प्रकार के कतिपय अनन्य आयोजनों के माध्यम से देशभक्त मोर्चा नागरिकों में राष्ट्रीय भावना जगाने, उनमें नयी चेतना जाग्रत करने और समय की माँग के साथ एक-जुट होकर एक सच्चे नागरिक की भूमिका निभाने का सत्कार्य निःस्वार्थ भाव से करता आया है। एक नवोन्मेष-शाली राष्ट्र के नागरिकों को प्रबुद्ध करने, उनकी रुचियों का परिष्कार करने तथा जन–सेवा के क्षेत्र में अपनी निष्ठा, त्याग, संयम और आस्थाओं के मानक स्थापित करने वाले अपने अग्रजों के अनुकरणीय आदर्श-व्यक्तित्व और कृतित्व को देश की भावी–पीढ़ियों के हितार्थ प्रस्तुत करने का बीड़ा उठाया है।

'परंतप' का प्रकाशन 'देशभक्त मोर्चा' के संकल्पों की लड़ी की एक नयी कड़ी है; संस्था का यह अकिंचन प्रयास माँ भारती के श्रीचरणों में 'मा फलेषु कदाचन' की भावना के साथ समर्पित है।

●

सर्वेश 'मौन'

# देश रहे खुशहाल देश में नयी दिशा लाओ।

चट्टानें जो रोके बैठीं, जलमय निर्मल नदियाँ।
बहीं न खेतों तक लहराकर, बीत गयीं सदियाँ।
बंजर भूमि बहाती आँसू, हो न सका उपयोग,
दबी रही खानों में माटी यह कैसा संयोग ?
मेहनत और लगन से जग में सब कुछ संभव है,
लड़ जाओ बंजर जमीन से सोना उपजाओ।
देश रहे खुशहाल देश में नयी दिशा लाओ।।

गृह-उद्योगों का विकास ही ऊन्नति का पथ है,
हर इच्छा का यही आदि है और यही अथ है।
भागो नहीं शहर को, अपने घर को पहचानो,
अपने गाँवों को सुधार कर स्वर्ग उन्हें मानो।।
भूखा रहे न कोई अब भारत की धरती पर,
रूप बदल दो नालों का अब नहरें खुदवाओ।
देश रहे खुशहाल, देश में नयी दिशा लाओ।।

सिर्फ नौकरी की खातिर जो शिक्षा वह बेकार।
पढ़ लिखकर भी उच्च किया जा सकता है व्यापार।
बेकारी तो स्वयं आप ही भिक्षुक बन जायेगी,
जब शिक्षा में कार्यशीलता सम्मुख आ जायेगी।
आज तुम्हें करना है साथी नव-युग का निर्माण,
हरित क्रान्ति से अपने घर में खुशहाली लाओ।
देश रहे खुशहाल, देश में नयी दिशा लाओ।।

जाति-पाँति के बन्धन भाई हैं जग में अभिशाप,
छुआछूत के कारण ही यह देश हुआ बर्बाद।
मानव सभी एक हैं केवल क्षमता अलग-अलग है,
लेकिन अपने भाई से ही भाई आज विलग है।
इस बीमारी का है मित्रो सच्चा एक इलाज,
नामों के आगे-पीछे अब जाति न जुड़वाओ।
देश रहे खुशहाल, देश में नयी दिशा लाओ।।

# राष्ट्रपिता गाँधी

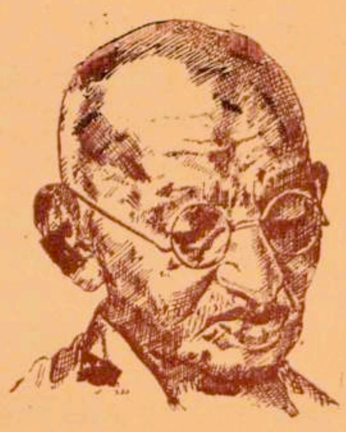

राष्ट्रपिता गाँधी !
तुम्हारी समाधि पर
हजारों नर-नारी
चढ़ाते ही रहते हैं
श्रद्धा के सुमन नित्य ।
मैले से कुरते में
बूढ़ा सा किसान एक
श्रद्धा से समाधि पर,
मस्तक झुका जाता है ।
फटी सी धोती में
गरीब सा भिखारी भी
तुम्हारी समाधि पर
श्रद्धा से
कभी-कभी राम-धुन गाता है ।
कहता है मेरे बापू
गहरी सी नींद में
धरती की गोद में
यहीं तो सोये हैं ।
मोटे से वस्त्रों में ढकी
एक बूढ़ी भी
गोद में बच्चा लिए
वरदान माँग जाती है ।
बापू !
तुम्हारे भक्त
समाधि के दर्शन को
श्रद्धा लिये आते हैं ।
आते हैं राज पुरुष
और
विदेशी राजदूत, राष्ट्रपति,
साहित्यकार,
कलाकार,
नृत्यकार,
बड़े-बड़े पुष्पहार लाकर
समाधि पर चढ़ाते हैं ।
नाम का आपके सहारा ले
शासन चलाते जो
वे भी समाधि पर
श्रद्धाँजलि देने को
आते ही रहते हैं ।
कहते हैं रामराज्य लायेंगे ।
कैसी कल्पना है ?
कैसी विडम्बना है ?
कैसा प्रदर्शन है ?
तुम्हारे पवित्र नाम का ।
दूर चले जा रहे हैं
मार्ग से तुम्हारे
और
भुला बैठे बापू तुम्हें
शासन-प्रलोभन में ।
पर फिर भी दावेदार बने
नाम के तुम्हारे हैं
कहते हैं
बापू के आदर्शों का
पालन करेंगे हम ।
गाँधी तुम मौन हो
पर बताओ राष्ट्रपिता
क्या तुम्हारे नाम को
जीवित रखेंगे ये ?

● विश्वम्भर सहाय 'प्रेमी'

# जनता का तू नेता प्यारा !

जनता का तू नेता प्यारा !
भारत की हर दिशा-दिशा में-
आज गूँजता नाम तुम्हारा !
जनता का तू नेता प्यारा !

उन्नीस माह एमरजेन्सी को-
तुमने झण्डी लाल दिखादी।
जनता के भयग्रस्त दिलों में–
साहस-सरिता सुखद बहादी।
एक साथ सब मिलकर बोले–
'अब बदलेगा भाग्य हमारा।'
जनता का तू नेता प्यारा !

जनता दुःख में डूब रही थी,
छाया था घनघोर अँधेरा।
'जनता-दल' की रचना करके–
दिया देश को नया सबेरा।
विनय-स्वरों में जनता बोली–
'हम पर यह अहसान तुम्हारा !'
जनता का तू नेता प्यारा !

जनता जागी, जीवन जागा,
दमन-चक्र का हुआ फैसला।
हार गयी चाण्डाल-चौकड़ी–
जनता से जिसने था खेला।
जनता की सरकार बनी जब–
गूँजा 'जय-जनता' का नारा।
जनता का तू नेता प्यारा !

अर्थ-व्यवस्था के रक्षक तुम--
बापू के सपनों में डूबे ।
नया मोड़ दे दिया देश को--
नयी योजना नव – मंसूबे ।
दिया इशारा एक नया जो--
बदल दिया इतिहास हमारा।
जनता का तू नेता प्यारा !

नाम चौधरी चरणसिंह है,
काम सिंह से ही तुम करते।
जनता के हित मरने मिटने--
से तुम कभी न पीछे हटते।
सब कहते--इस महापुरुष ने
जनता का है भाग्य सँवारा।
जनता का तू नेता प्यारा !

कृषक सुखी, हरिजन मुस्काते,
कमकर गीत खुशी के गाते।
सबकी सुनते, दुःख को हरते--
समता की सुदृष्टि अपनाते।
दिलों-दिलों में याद रहेगा--
युगों-युगों तक नाम तुम्हारा।
जनता का तू नेता प्यारा !

भारत की जनता को तुमने ही
जनता का राज दिया है।
चरणसिंह तुमने जनता के
सपनों को साकार किया है।
कौन कभी बिसरा सकता है
रचना - धर्मी सुयश तुम्हारा !
जनता का तू नेता प्यारा !

जी० एस० 'मधुप'

# आ भा र

'परंतप' प्रकाशन के लिए देशभक्त-मोर्चा के समर्थ सदस्यों ने १००१) रुपये की निश्चित धनराशि समान-रूप से प्रदान कर नयी संगठन शक्ति का अनुकरणीय परिचय दिया है। इन सबके प्रति हृदय से आभार व्यक्त करते हुए, हम उनके नामों का गौरवपूर्ण उल्लेख, सहर्ष कर रहे हैं।

- सरदार हरबंस सिंह भल्ला
  लाजपत नगर, कानपुर
- सरदार मनमोहन सिंह
  पाण्डुनगर, कानपुर
- सरदार हरबंस सिंह होरा
  शास्त्रीनगर, कानपुर
- सरदार अमर सिंह, पृथ्वीपाल सिंह
  गोविन्द नगर, कानपुर
- सरदार चरण सिंह चावला
  अशोक नगर, कानपुर
- सरदार सुरेन्द्रपाल सिंह
  मन्त्री, देशभक्त मोर्चा, कानपुर
- सरदार हरभजन सिंह
  अशोक नगर, कानपुर
- परमानन्द पंजवानी
  हर्षनगर, कानपुर
- मोहन स्वरूप घई
  लाजपत नगर, कानपुर
- ज़फ़र मुस्तफ़ा नय्यर, एडवोकेट
  बांसमन्डी, कानपुर
- हाजी सादुल्ला
  हरदोई ट्रांसपोर्ट कम्पनी, कानपुर
- हाजी नव्वन छाते वाले
  मेस्टन रोड, कानपुर
- मोहिबुल गफ़ूर
  स्वरूप नगर, कानपुर
- एन॰ आर॰ भाटिया
  एफ. सी. सी., यू. पी., कानपुर
- राजेन्द्र कुमार मिश्र
  मुनीरका, नयी दिल्ली
- प्रेम कुमार तिवारी
  कालपी रोड, कानपुर
- श्रीमती पुष्पा बाजपेयी
  कैलासमन्दिर, कानपुर
- रमाकान्त पाण्डेय
  यशोदानगर, कानपुर
- रामपाल शर्मा
  कृष्णा पब्लिसिटी, कानपुर
- हरिमाधव अवस्थी
  अध्यक्ष, के. के. ट्रस्ट, कानपुर
- शिवमोहन डालमिया
  तिलक नगर, कानपुर
- विजय कुमार केडिया
  जनरलगंज, कानपुर
- सतीश अग्रवाल 'माईधन'
  किदवई नगर, कानपुर
- हरीश सेठी
  सागर आर्ट पब्लिसिटी, नयी दिल्ली
- प्रताप नारायण बाजपेयी
  घुमनी मोहाल, कानपुर
- गोपीनाथ तिवारी
  किदवई नगर, कानपुर
- परम दीक्षित
  ८० फीट रोड, कानपुर
- महेशचन्द्र जौहरी
  कराचीखाना, कानपुर
- ब्रजमोहन डालमिया
  बिरहाना रोड, कानपुर
- सुशील कुमार कानोडिया
  नयागंज, कानपुर
- दयाप्रसाद तिवारी
  कालपी रोड, कानपुर
- एस॰ पी॰ तिवारी
  जी. टी. रोड, कानपुर
- बृजेन्द्र कुमार मिश्र
  सिविल लाइंस, कानपुर
- जी॰ पी॰ श्रीवास्तव
  हर्षनगर, कानपुर
- डा॰ मोहन चौधरी
  बिरहाना रोड, कानपुर
- अजय टण्डन
  कुरसवाँ, कानपुर
- विद्यासागर दीक्षित
  आर्यनगर, कानपुर
- जयदेव शर्मा
  जवाहर नगर, कानपुर
- विश्वम्भर नाथ
  जाजमऊ, कानपुर
- पुरुषोत्तम साहू
  कैनाल रोड, कानपुर
- अनिल साहू
  हालसी रोड, कानपुर
- श्री बाबूराम महेश्वरी
  महेश्वरी ब्रदर्स, कानपुर
- तिवारी रेस्टारेन्ट
  बिरहानारोड, कानपुर
- साप्रा इलेक्ट्रिकल्स
  गोविन्द नगर, कानपुर
- श्री थांगजोम, एम.एल.ए.
  मणिपुर (त्रिपुरा)
- नेशनल केमिकल इण्डस्ट्रीज
  लाजपत नगर, कानपुर
- माधवीलता शुक्ल एम॰ ए॰
- मनोहर लाल, संसद सदस्य

●

प्रबन्धक

रामपाल शर्मा

रामनारायण शर्मा

लक्ष्मीकान्त शर्मा

राकेश शर्मा

अम्बरीश शर्मा

राहुल शर्मा

शंकरसेन गुप्तो (ख)

'परंतप' के मुद्रण में जिन्होंने अपना श्रम समर्पित किया और दो महीने के अल्प समय में ही इस भगीरथ-प्रयास को सफल बनाया। इनके अतिरिक्त हमें रामजी प्रेस, टाइम्स आफ इण्डिया, प्रोसेसिंग विभाग और नेवटिया एण्ड कम्पनी का भी सहयोग प्राप्त हुआ।

—देशभक्त मोर्चा

इन्द्रपाल सिंह बग्गा (क)

सुधीर कुमार रस्तोगी (क)

अनन्त दीन शुक्ल (क)

बृजराज शुक्ल (क)

मिठाई लाल पटेल (क)

हफ़ीज़ुर रहमान जौहरी (ग)

जगदेव प्रसाद मौर्य (ग)

अयोध्या प्रसाद मौर्य (ग)

एस. मन्ज़र वसीम (ख)

विमल तिवारी (ख)

अब्दुल हमीद अन्सारी (घ)

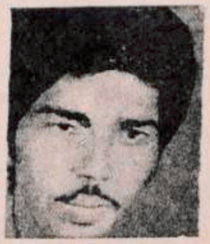

इन्तज़ार अली (घ)

इरशाद अहमद (घ)

राम औतार सिंह (क)

रमेश सिंह (क)

क–कम्पोज़िंग विभाग, ख–ब्लाक विभाग, ग–मुद्रण विभाग, घ–बाइन्डिंग विभाग।

कवर सीनियर बाक्स कंबूटो रामजी प्रेस कानपुर में मुद्रित